Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

विश्व इतिहास

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: MPEX01

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

विश्व इतिहास

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन और प्रबोधन **5–20**

- **1.1** पुनर्जागरण का अर्थ 5
- **1.2** पुनर्जागरण के कारण 5
- **1.3** पुनर्जागरण के प्रभाव 7
- **1.4** पुनर्जागरण का स्वरूप 11
- **1.5** धर्म सुधार आंदोलन 12
- **1.6** प्रबोधन 15

2. इंग्लैंड की क्रांति **21–25**

- **2.1** पृष्ठभूमि 21
- **2.2** 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति 21
- **2.3** क्रांति के कारण 22
- **2.4** क्रांति का प्रभाव 23
- **2.5** क्रांति का महत्त्व 24

3. अमेरिकी क्रांति **26–34**

- **3.1** अमेरिकी क्रांति के कारण 26
- **3.2** अमेरिकी क्रांति के प्रभाव 29
- **3.3** अमेरिकी संविधान का निर्माण 30
- **3.4** अमेरिकी गृहयुद्ध 32

4. फ्राँसीसी क्रांति **35–48**

- **4.1** फ्राँसीसी क्रांति के कारण 35
- **4.2** दार्शनिकों/विचारकों की भूमिका 37
- **4.3** क्रांति फ्राँस में ही क्यों? 37
- **4.4** क्रांति का उद्भव और प्रसार 38
- **4.5** फ्राँसीसी क्रांति का स्वरूप एवं प्रभाव 40
- **4.6** नेपोलियन का उदय एवं उसके सुधार 43

5. औद्योगिक क्रांति **49–58**
5.1 सर्वप्रथम इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति होने के कारण 49
5.2 औद्योगिक क्रांति के परिणाम/प्रभाव 52
5.3 औद्योगिक क्रांति का प्रसार 56

6. 1917 की रूसी क्रांति **59–69**
6.1 रूसी क्रांति के कारण 59
6.2 1917 की फरवरी/मार्च क्रांति 62
6.3 बोल्शेविक क्रांति : 8 नवंबर, 1917 62
6.4 रूसी क्रांति के परिणाम 63
6.5 लेनिन एवं उसकी सफलताएँ 64
6.6 स्टालिन : नीतियाँ एवं कार्य 67

7. प्रथम विश्व युद्ध **70–84**
7.1 प्रथम विश्व युद्ध के कारण 70
7.2 प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम 75
7.3 पेरिस शांति सम्मेलन, 1919 77
7.4 विल्सन के 14 सूत्र 78
7.5 वर्साय की संधि के प्रावधान एवं मूल्यांकन 79

8. द्वितीय विश्व युद्ध **85–94**
8.1 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 85
8.2 द्वितीय विश्व युद्ध की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ 88
8.3 द्वितीय विश्व युद्ध : परिणाम/प्रभाव 90

अध्याय 1

पुनर्जागरण, धर्म सुधार आंदोलन और प्रबोधन (Renaissance, Religion Reform Movement and Enlightenment)

तीसरी शताब्दी में प्रसिद्ध रोमन साम्राज्य का विभाजन पूर्वी एवं पश्चिमी रोमन साम्राज्य में हो गया, जिसमें पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया जबकि पश्चिमी रोमन साम्राज्य की राजधानी रोम थी। जर्मन आक्रमणकारियों से त्रस्त रोमन साम्राज्य का 5वीं शताब्दी में अवसान हो गया और यही वह समय था जब यूरोप में मध्यकाल का प्रारंभ हुआ तथा सामंतवादी प्रवृत्ति विकसित हुई। मध्यकाल के मुख्य अभिलक्षण थे– राजनीतिक सत्ता के रूप में राजतंत्र का पतन एवं सामंतवाद का उद्‌भव और विकास, धार्मिक सत्ता तथा सामंत में बेहतर तालमेल एवं उपभोग वर्ग के रूप में उसकी स्थिति, व्यापार–वाणिज्य का पतन तथा समस्त यूरोप में विकास के नाम पर गतिरोध उत्पन्न होना। आमतौर पर इसे अंधकार युग के नाम से जाना जाता है। इसके पश्चात् यूरोप में एक नई चेतना उदित हुई जिसे पुनर्जागरण का नाम दिया गया।

1.1 पुनर्जागरण का अर्थ *(Meaning of Renaissance)*

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता है– 'फिर से जागना'। यह वह स्थिति है जब विभिन्न यूरोपीय देशों ने एक लंबी अवधि के उपरांत मध्यकाल के अंधकार युग को त्यागकर आधुनिक युग में दस्तक दी। पुनर्जागरण एक बौद्धिक आंदोलन था जिसकी शुरुआत 14वीं शताब्दी में इटली से हुई तथा 16वीं शताब्दी तक इसका प्रसार विभिन्न यूरोपीय देशों, जैसे–जर्मनी, ब्रिटेन आदि में हुआ। पुनर्जागरण के दो आयाम थे– 'दुनिया की खोज' तथा 'मानव की खोज'। दुनिया की खोज से तात्पर्य यहाँ उन नवीन भौगोलिक खोजों से है जिनके द्वारा अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया की खोज की गई जबकि मानव की खोज यहाँ पर मध्यकालीन पोपशाही व चर्च के चंगुल में जकड़ी मानव सृष्टि में स्वतंत्र चिंतन शैली के विकास को अभिव्यक्त करती है।

उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियों के अनुसार मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि पुनर्जागरण एक ऐसा बौद्धिक एवं उदार सांस्कृतिक आंदोलन था जिसमें प्राचीन यूरोप से प्रेरणा लेकर नए यूरोप का निर्माण किया जा रहा था तथा तार्किक, आलोचनात्मक व अन्वेषणात्मक प्रवृत्तियाँ जन्म ले रही थीं। परिणामस्वरूप मनुष्य मध्यकालीन बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र चिंतन की ओर अग्रसर हुआ जिससे मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का उन्नयन हुआ जो उस युग की कला, साहित्य, दर्शन एवं विज्ञान आदि क्षेत्रों में प्रकट हुए।

पुनर्जागरण के विभिन्न पहलुओं में तार्किकता, मानवतावादी दृष्टिकोण, वैज्ञानिक प्रगति आदि का विशेष महत्त्व है। इससे समस्त यूरोप में सामंतवाद के खँडहरों पर आधुनिकता का आविर्भाव हुआ।

1.2 पुनर्जागरण के कारण *(Causes of Renaissance)*

पुनर्जागरण सिर्फ प्राचीन रोम तथा यूनानियों द्वारा प्राप्त उपलब्धियों की एक घटना मात्र नहीं थी बल्कि लगभग दो शताब्दियों के मानवीय प्रयासों का परिणाम था। इसके उदय के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा जाना जा सकता है–

पुनर्जागरण के कारण

- आर्थिक कारण
- धर्मयुद्ध की भूमिका
- कुस्तुनतुनिया का पतन
- प्रेस का आविष्कार
- मंगोल साम्राज्य का उत्कर्ष

उपनिवेशों में प्रबोधन का प्रसार *(Spread of enlightenment in the colonies)*

17–18वीं शताब्दी में फ्राँस व इंग्लैंड से प्रारंभ होने वाला यह चिंतन अमेरिका तथा एशिया जैसे उपनिवेशों में भी प्रसारित हुआ। अमेरिका में बेंजामिन फ्रैंकलिन, जेम्स ओटिस, टॉमस पेन, पेट्रिक हेनरी व सेमुअल एडम्स प्रमुख प्रबोधन के चिंतक रहे जिन्होंने 'क्लब' व पुस्तकालय और पत्रिकाओं के माध्यम से प्रबोधन चेतना का प्रसार किया।

एशिया में प्रबोधन का प्रसार ईसाई मिशनरियों तथा साम्राज्यवादी देशों की शोषक नीतियों का परिणाम था। चीन में प्रबोधन के प्रभाव से स्वतंत्रता, प्रगतिशीलता, आक्रामकता के मूल्यों का प्रसार हुआ और कन्फ्यूशियसवाद को चुनौती दी गई। जापान में 'मेराकुशा' जैसी संस्थाएँ प्रबोधन की वाहक बनीं जिन्होंने नैतिकता, आत्मनिर्भरता के मूल्यों को सर्वोच्चता प्रदान की। स्त्री शिक्षा व रोज़गार प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया।

भारत में औपनिवेशिक लूट, नस्लीय भेदभाव, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्राँसीसी क्रांति, इटली का एकीकरण, मार्क्स का चिंतन प्रबोधन के प्रेरक रहे। भारत के नवशिक्षित वर्ग ने प्रबोधन में वाहक की भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय, डेविड हेयर, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद के विचारों ने बुद्धिवादी चिंतन और सामाजिक समानता के मूल्यों को समाज में लोकप्रिय बनाया। टैगोर, शरच्चंद्र, प्रेमचंद ने जनसामान्य की समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान देकर प्रबोधन के विचारों का अनुकरण किया।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- यूरोपीय इतिहास के संदर्भ में मोटे तौर पर 14वीं से 16वीं शताब्दी के 1350 ई. से 1550 ई. के बीच के काल को पुनर्जागरण काल का नाम दिया जाता है।
- पुनर्जागरण काल में वेनिस, मिलान तथा फ्लोरेंस आदि अंतर्राष्ट्रीय शहरों का जन्म हुआ।
- यूरोप के पुनर्जागरण काल के प्रमुख चित्रकार फ्लोरेंस निवासी जिपोटो, लियोनार्दो–द–विंची व माइकेल एंजेलो थे।
- मूर्तिकला के क्षेत्र में जियोवर्टी, माइकेल एंजेलो, सेलिनी तथा डोनातेल्लो आदि ने इस काल में ख्याति प्राप्त की।
- टॉमस (Thomas) ब्रासी एक ब्रिटिश सिविल इंजीनियर था। 19वीं शताब्दी में विश्वभर में होने वाले अधिकांश रेलवे निर्माण में इनका योगदान था। इन्होंने ब्रिटेन के लगभग एक तिहाई (1/3) रेलवे का निर्माण कार्य कराया।
- वाद्य संगीत पुनर्जागरण में लोकप्रिय हुआ तथा नए वाद्य–यंत्रों का आविष्कार हुआ। आधुनिक 'ओपेरा' का जन्म इस काल का माना जाता है।
- पुनर्जागरण काल में सर्वप्रथम ऑयल पेंटिंग का निर्माण हुआ जो काफी समय तक स्थायी रह सकती थी। इसके विपरीत मध्यकाल में केवल पानी में रंगों को घोलकर ही चित्र बनाया जाता था। ये चित्र थोड़ी नमी से नष्ट हो जाते थे।
- इस काल में (1492 ई.) कोलंबस ने नई दुनिया अमेरिका की खोज की।
- 17–18वीं शताब्दी में यूरोप में कुछ क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जिस कारण इस काल को प्रबोधन (ज्ञानोदय अथवा विवेक) का युग कहा जाता है।
- प्रबोधन के प्रमुख चिंतकों में लॉक, कांट, वाल्टेयर, रूसो तथा मॉण्टेस्क्यू का नाम अग्रणी है।
- रूसो ने सोशल–कॉन्ट्रैक्ट (सामाजिक–संविदा) नामक पुस्तक में अपने सामाजिक संविदा संबंधी विचार प्रस्तुत किये।
- चार्ली–लुई द मॉण्टेस्क्यू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ लॉ' में शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत की रूपरेखा प्रस्तुत की।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

(a) टॉमस ब्रासी (Thomas Brassey) **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
(b) इरैज़्मस (Erasmus) **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
M.P.P.C.S. (Mains) 2015
(c) राफेल **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
(d) मॉण्टेस्क्यू **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
(e) लियोनार्दो–द–विंची **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
(f) 'सामाजिक-संविदा' **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
(g) शक्ति–पृथक्करण का सिद्धांत **M.P.P.C.S. (Mains)2016**
(h) रूसो **M.P.P.C.S. (Mains) 2014**
(i) जॉन लॉक
(j) द लास्ट सपर
(k) एडम स्मिथ
(l) पुनर्जागरण
(m) कांट
(n) मोनालिसा
(o) वाल्टेयर
(p) प्रबोधन

लघु व दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 300 शब्दों में दीजिये)

1. यूरोपीय पुनर्जागरण में माइकेल एंजेलो के योगदानों को रेखांकित कीजिये।**(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. पुनर्जागरण इटली में ही क्यों प्रारंभ हुआ? कारणों की विवेचना कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
3. पुनर्जागरण की विशेषताओं का वर्णन कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
4. यूरोप में हुए पुनर्जागरण से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख कारण बताइये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2014**
5. पुनर्जागरण के प्रभावों की विवेचना कीजिये।
6. पुनर्जागरण काल के स्वरूप/प्रकृति का संक्षेप में वर्णन कीजिये।
7. यूरोप के पुनर्जागरण का कला और संस्कृति के क्षेत्र पर क्या प्रभाव पड़ा? टिप्पणी कीजिये।
8. पुनर्जागरण काल के धर्म सुधार आंदोलनों की संक्षिप्त में चर्चा कीजिये।
9. प्रबोधन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

अध्याय
2

इंग्लैंड की क्रांति (Revolution of England)

इंग्लैंड की क्रांति स्टुअर्ट वंश के राजा जेम्स द्वितीय के शासनकाल में हुई। वह 1685 ई. में इंग्लैंड के राजसिंहासन पर बैठा। उसकी क्रूर धार्मिक और राजनीतिक नीतियों के कारण इंग्लैंड में 1688 ई. में 'गौरवपूर्ण क्रांति' घटित हुई। इसे 'रक्तहीन क्रांति' या 'वैभवपूर्ण क्रांति' भी कहा जाता है। 18वीं सदी तक विश्व में तीन प्रमुख क्रांतियाँ विभिन्न देशों में हुईं। ये देश अवश्य अलग-अलग थे परंतु इन क्रांतियों का प्रभाव विश्व के सभी देशों पर पड़ा और इनके सकारात्मक परिणाम भी निकले। इन क्रांतियों में इंग्लैंड की गौरवपूर्ण क्रांति (1688) सर्वप्रथम घटित हुई। इंग्लैंड की क्रांति ने अमेरिका में भी स्वतंत्रता प्राप्ति की मांग को बुलंद किया। अमेरिका में ससंद तथा जनता में तनाव का माहौल था। अत: अमेरिकी उपनिवेश ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये संघर्ष किया। यही संघर्ष अमेरिकी क्रांति (1776 ई.) कहलाता है।

अमेरिकी क्रांति तथा इंग्लैंड की क्रांति (1688) के कारण ही यूरोप में क्रांति का दौर आरंभ हुआ। आगे फ्राँस में चर्च, कुलीन तथा शासक वर्ग के विरुद्ध श्रमिकों, कृषकों तथा बुद्धिजीवियों के द्वारा जो क्रांति हुई वह फ्राँसीसी क्रांति (1789) कहलाती है। परंतु 1688 ई. की इंग्लैंड की क्रांति शांतिपूर्ण संपन्न हुई। इस क्रांति में इंग्लैंड की शासन व्यवस्था तथा इंग्लैंड का राजा बदला, पर कहीं खून का एक कतरा नहीं गिरा जो इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता भी है।

2.1 पृष्ठभूमि *(Background)*

इंग्लैंड के तात्कालिक शासक जेम्स द्वितीय की निरंकुशता तथा स्वेच्छाचारिता से तंग आकर जनता ने क्रांति का आह्वान किया। जेम्स द्वितीय को इंग्लैंड का शासक बनने के बाद सुरक्षित वातावरण प्राप्त हुआ। विरोधी दल समाप्त हो चुका था, परिस्थितियाँ राजतंत्र के पक्ष में थीं। राज्य के प्रति बिना विरोध आज्ञाकारिता का सिद्धांत स्वीकार किया जा चुका था। संसद के अधिकतर सदस्य राजा के दैवी अधिकार सिद्धांत का समर्थन करने वाले थे। लेकिन बाद में परिस्थितियाँ बदलने लगीं क्रांति के लिये जेम्स द्वितीय ने स्वयं ही परिस्थितियाँ तैयार कीं। उसके अनुचित एवं अवैध कार्यों से सभी दलों के लोगों में तीव्र रोष और विरोध फैला।

इंग्लैंड की जनता को विश्वास हो गया था कि राजा अपनी स्वेच्छा से शासन करेगा। जेम्स द्वितीय ने राजा बनने के बाद कैथोलिक चर्च की शक्ति को बढ़ाना तथा कैथोलिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया। उसने विश्वविद्यालयों तथा सरकारी नौकरियों के महत्त्वपूर्ण पदों पर कैथोलिकों को रखा। उसने न्यायालय में अपने विश्वासपात्र न्यायाधीशों को रहने दिया क्योंकि वह टेस्ट एक्ट को खत्म करना चाहता था। इंग्लैंड की जनता काफी समय तक उसके तानाशाही शासन को इस कारण बर्दाश्त करती रही कि उसकी मृत्यु के बाद कैथोलिक शासन का अंत होगा। परंतु जून 1688 में जेम्स की दूसरी कैथोलिक पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। जनता को विश्वास हो गया कि अब जेम्स की नीतियाँ उसकी मृत्यु के उपरांत भी चलती रहेंगी। इस आशंका ने इंग्लैंड की जनता को क्रांति के लिये प्रेरित किया।

2.2 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति *(The Glorious Revolution of 1688)*

जेम्स द्वितीय के शासनकाल में विभिन्न घटनाएँ घटित हुईं जिन्होंने क्रांति को अवश्यंभावी बना दिया। ये घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

जेम्स द्वितीय के पुत्र का जन्म

जेम्स की पहली पत्नी की केवल एक पुत्री थी। वह प्रोटेस्टेंट धर्म को मानती थी। उसका विवाह ऑरेंज (हॉलैंड) के राजकुमार विलियम से हुआ। वह भी प्रोटेस्टेंट मतावलंबी था। इंग्लैंड की जनता का विश्वास था कि वही इंग्लैंड पर शासन करेगी, इसलिये वे जेम्स के अनुचित और अनाचारपूर्ण कृत्यों को सहते रहे। जेम्स की दूसरी पत्नी कैथोलिक थी। जून 1688 में उसने एक पुत्र को जन्म दिया तो जनता में धारणा बनी कि उसके पुत्र की शिक्षा तथा लालन-पालन कैथोलिक धर्म के अनुसार ही होगा। जनता में भय और आतंक फैल गया क्योंकि उनका मानना था जेम्स की मृत्यु के बाद उसकी दूसरी पत्नी का कैथोलिक पुत्र ही राजा बनेगा।

अध्याय
3

अमेरिकी क्रांति (American Revolution)

1492 ई. में स्पेन निवासी कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज की गई। विकास की अपार संभावनाओं के कारण इस क्षेत्र विशेष में यूरोपीय देशों की दिलचस्पी बढ़ने लगी। 18वीं शताब्दी के मध्य तक उत्तरी अमेरिका के अटलांटिक तट के समीपवर्ती क्षेत्रों में ब्रिटेन के अधीन 13 उपनिवेश अस्तित्व में आ चुके थे। ये विविध उपनिवेश एक मिश्रित संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत कर रहे थे जिसमें ब्रिटेन, फ्राँस, जर्मनी, हॉलैंड, पुर्तगाल आदि देशों के भूमिहीन किसान, धार्मिक स्वतंत्रता के आकांक्षी, व्यापारी एवं बिचौलिये आदि जाकर बस गए थे। भौगोलिक दृष्टि से अमेरिका का उत्तरी भाग मत्स्य पालन हेतु, मध्यवर्ती भाग शराब तथा चीनी उद्योग हेतु एवं दक्षिणी भाग कृषि कार्य के लिये समृद्ध क्षेत्र था। यहाँ अंग्रेज़ ज़मींदारों के अधीन बड़े-बड़े कृषि फार्म थे जिसमें अफ्रीकी गुलामों की सहायता से खेती (विशेषकर तंबाकू एवं कपास की खेती) की जाती थी।

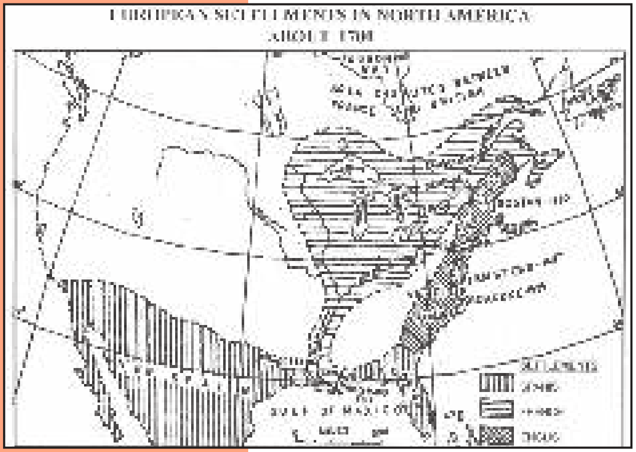

अमेरिका स्थित कुल 13 ब्रिटिश उपनिवेशों के प्रत्येक उपनिवेश में शासन का संचालन गवर्नर और उसकी कार्यकारिणी समिति के अधीन विधानसभा द्वारा होता था। गवर्नर ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था। गवर्नर की नियुक्ति ब्रिटिश सत्ता द्वारा की जाती थी एवं उसकी कार्यकारिणी समिति में ब्रिटिश ताज द्वारा मनोनीत सदस्य होते थे जबकि विधानसभा का गठन विशिष्ट मतदाताओं द्वारा निर्वाचन के फलस्वरूप होता था, जो मुख्य रूप से स्थानीय विषयों से संबंधित कानून के निर्माण के साथ-साथ कर (Tax) भी लगाती थी। अंततः इस शासन व्यवस्था पर अंतिम और निर्णायक नियंत्रण ब्रिटिश सत्ता का ही होता था तथा ब्रिटिश हितों को ही प्राथमिकता दी जाती थी।

18वीं शताब्दी में इन उपनिवेशों के संबंध में कुछ आपत्तिजनक कानूनों व अन्य परिस्थितियों ने उपनिवेश की जनता में असंतोष एवं घृणा को बढ़ावा दिया तथा जनता इस शोषणकारी औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध उठ खड़ी हुई और अंततः उपनिवेशवासियों का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित हुआ।

3.1 अमेरिकी क्रांति के कारण *(Causes of American Revolution)*

अमेरिकी क्रांति के विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारण थे, लेकिन यह स्वतंत्रता संघर्ष मुख्य रूप से ग्रेट ब्रिटेन तथा उसके उपनिवेशों के मध्य आर्थिक हितों का संघर्ष माना जाता है। इस क्रांति के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है-

अमेरिकी क्रांति के कारण

- इंग्लैंड के प्रति सहानुभूति का अभाव
- स्वतंत्रता की भावना से युक्त अमेरिकी
- सप्तवर्षीय युद्ध
- बौद्धिक चेतना का प्रसार
- दोषपूर्ण शासन व्यवस्था
- नियंत्रण का प्रयास नहीं
- संवैधानिक मुद्दा
- उपनिवेशों के प्रति इंग्लैंड की कठोर नीति

अध्याय 4

फ्राँसीसी क्रांति (The French Revolution)

1789 ई. की फ्राँसीसी क्रांति फ्राँस की निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजनीतिक सत्ता के विरुद्ध एक क्रांति थी, जिसके मूल में असमानता और भेदभाव पर आधारित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था विद्यमान थी। इस क्रांति ने संपूर्ण विश्व में स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व पर आधारित मापदंडों को प्रसारित किया।

4.1 फ्राँसीसी क्रांति के कारण *(Causes of the French Revolution)*

फ्राँसीसी क्रांति के कारण फ्राँस की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में निहित थे। समाज का स्वरूप जहाँ भेद-भाव वाली व्यवस्थाओं पर आधारित था वहीं आर्थिक स्तर पर फ्राँस दिवालियापन के कगार पर पहुँच गया था। राजनीतिक व्यवस्था निरंकुशता पर आधारित थी। फ्राँसीसी क्रांति के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

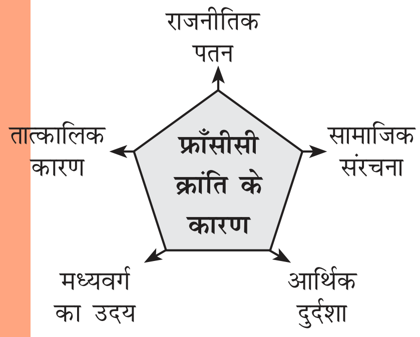

राजनीतिक पतन *(Political decline)*

- इंग्लैंड जैसे देश को छोड़कर संपूर्ण यूरोप में दैवी सिद्धांतों पर आधारित निरंकुश एवं स्वेच्छापूर्ण शासन का प्रचलन था। फ्राँस के संबंध में यह व्यवस्था मुखर थी। फ्राँसीसी शासक लुई चौदहवाँ अपने आपको 'मैं ही राज्य हूँ' कहा करता था।
- राजनीतिक एवं प्रशासनिक पदों पर वंशानुगत आधार पर ही नियुक्ति होती थी जिस पर सामंत एवं पादरी वर्ग का एकाधिकार था। लुई सोलहवाँ एक अकर्मण्य और अयोग्य शासक था इसके समय में फ्राँस की राजनीतिक व्यवस्था अराजकता व भ्रष्टाचार जैसे तत्त्वों से आच्छादित थी। उसने भी स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता का प्रदर्शन किया। उस पर उसकी पत्नी का काफी प्रभाव था, वह काफी फिज़ूलखर्च थी जिसका भार राज्य के कोष पर पड़ता था।

सामाजिक संरचना *(Social structure)*

- अगर हम फ्राँस की तत्कालीन सामाजिक दशा की तुलना यूरोप के अन्य देशों से करें तो निश्चित रूप से यह कह सकते हैं फ्राँस की दशा अन्य यूरोपीय देशों से अधिक खराब नहीं थी, लेकिन साधारण जनता को बहुत कष्ट सहने पड़ रहे थे। आमतौर पर फ्राँसीसी समाज विशेषाधिकार प्राप्त एवं विशेषाधिकारहीन वर्गों में विभाजित था।
- विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के अंतर्गत पादरी एवं आभिजात्य अथवा कुलीन वर्ग आते थे, जबकि विशेषाधिकारहीन वर्गों में किसान, मज़दूर एवं मध्यमवर्ग जैसे– व्यापारी, लेखक, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर आदि शामिल थे। सारांशत: फ्राँसीसी समाज तीन वर्गों– पादरी वर्ग, कुलीन वर्ग एवं किसान-मज़दूर-मध्यम वर्ग (व्यापारी तथा प्रबुद्ध वर्ग) में बँटा था।
- समाज में प्रथम दो वर्ग– पादरी एवं कुलीन वर्ग– तुलनात्मक रूप से कम जनसंख्या वाले थे, परंतु उच्च प्रशासनिक पदों एवं सैन्य पदों पर अधिकांशत: इन्हीं की नियुक्ति होती थी। साथ ही ये दोनों वर्ग करों की ज़िम्मेदारियों से मुक्त थे। इसके अलावा फ्राँस की कुल भूमि के लगभग 40% पर इन्हीं दो वर्गों का अधिकार था। इस तरह कहा जा सकता है कि फ्राँसीसी समाज में इन दोनों वर्गों की विशिष्ट स्थिति थी।
- इन दोनों वर्गों में कुछ लोग ऐसे थे जिनका स्तर तीसरे वर्ग से कहीं बेहतर नहीं कहा जा सकता था। ये लोग अपने ही वर्ग के उच्च स्तर वाले लोगों से प्रतिद्वंद्विता करते थे एवं तत्कालीन व्यवस्था से असंतुष्ट थे। ये अपने वर्गों के समृद्ध लोगों को ही अपने दुखों का कारण मानते थे। स्वाभाविक रूप से इनकी नीति तीसरे वर्गों के समर्थन की थी।

अध्याय
5

औद्योगिक क्रांति
(Industrial Revolution)

औद्योगिक क्रांति से आशय उन वैज्ञानिक आविष्कारों, तकनीकी अनुसंधानों एवं उनके अनुप्रयोगों से है जिसके फलस्वरूप 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैंड में परंपरागत उद्योगों के स्थान पर नए एवं विशाल उद्योगों की स्थापना की गई जिससे उत्पादन की तीव्र गति एवं बेहतर उत्पाद के फलस्वरूप तत्कालीन औद्योगिक परिवेश में क्रांतिकारी परिवर्तन आए। 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल तक इंग्लैंड में लघु एवं कुटीर उद्योग-धंधों की ही प्रमुखता थी, परंतु नए-नए यांत्रिक अनुसंधानों के फलस्वरूप संगठित एवं विशाल कारखाना पद्धति का विकास हुआ, जिसमें मशीनों द्वारा व्यापक पैमाने पर उत्पादन संभव हो सका। इस बदले परिवेश से पूंजीवादी विचारधारा सामने आई तथा देश के संपूर्ण औद्योगिक जगत पर पूंजीपतियों का निर्णायक नियंत्रण स्थापित हो गया। इस तरह कुटीर उद्योगों के स्थान पर कारखाना प्रणाली तथा दस्तकारी के स्थान पर मशीन युग की शुरुआत ही औद्योगिक क्रांति है। इस क्रांति ने वृहद् पैमाने पर पूंजीवाद के विकास को प्रोत्साहन, औद्योगिक श्रमिक-वर्ग के स्तर में बदलाव, जनसंख्या में वृद्धि तथा इसका स्थानांतरण एवं नव साम्राज्यवाद को बढ़ावा दिया, साथ ही नई सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं को भी जन्म दिया।

5.1 सर्वप्रथम इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति होने के कारण
(Reason Behind First Industrial Revolution in England)

18वीं शताब्दी में फ्राँसीसी उद्योग-धंधे एवं व्यापार इंग्लैंड की अपेक्षा उन्नत अवस्था में थे। जनसंख्या के मामले में फ्राँस की जनसंख्या इंग्लैंड से लगभग तिगुनी थी। खनिज संसाधन, मशीनी शक्ति एवं कच्चा माल भी फ्राँस में अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध था, फिर भी औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में ही क्यों हुई? इसके लिये अनेक कारण उत्तरदायी थे, जो इस प्रकार हैं–

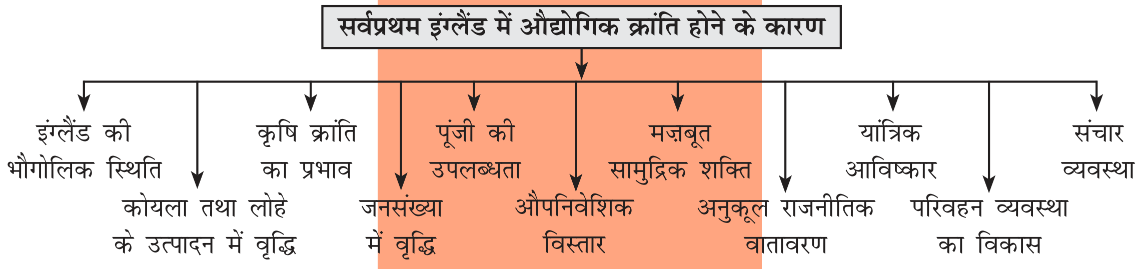

इंग्लैंड की भौगोलिक स्थिति *(Geographical situation of England)*

- इंग्लैंड की अनुकूल भौगोलिक स्थिति ने औद्योगिक क्रांति के लिये एक मज़बूत आधार प्रदान किया। चारों ओर से समुद्र से घिरे होने के कारण इंग्लैंड के चारों ओर अनेक बंदरगाहों का विकास हुआ। व्यापारिक आवागमन में सुविधा तथा परिवहन की सस्ती एवं अच्छी सुविधाओं जैसे निर्णायक कारकों से आंतरिक एवं बाह्य व्यापार को प्रोत्साहन मिला।
- कपड़ों के उत्पादन के लिये उपयुक्त जलवायु, शक्ति साधन के रूप में कोयला, धातु के रूप में लोहा तथा आवागमन हेतु नदियों की उपस्थिति ने औद्योगिक क्रांति हेतु प्रेरक तत्त्व का काम किया।

कोयला तथा लोहे के उत्पादन में वृद्धि *(Increase in production of coal and iron)*

- इंग्लैंड में कोयला एवं लोहे के प्रचुर भंडार के बावजूद उसका कोई विशेष महत्त्व नहीं था जब तक उसके उत्पादन में वृद्धि न हो, जिससे ईंधन के रूप में तथा मशीन निर्माण में इसका यथेष्ट उपयोग हो सके।

अध्याय
6

1917 की रूसी क्रांति (Russian Revolution of 1917)

1917 की रूसी क्रांति मुख्य रूप से रूस की पिछड़ी अर्थव्यवस्था, किसानों एवं मज़दूरों की विपन्नता, निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासन के अत्याचार, जन-विद्रोह, सरकार में मज़दूरों की दशा में सुधार लाने की इच्छाशक्ति का अभाव आदि का सम्मिलित परिणाम थी। 1917 ई. की रूसी क्रांति प्रथम विश्वयुद्ध के काल में ऐसी परिस्थितियों में हुई जब रूस की सेनाओं की सर्वत्र हार हो रही थी परंतु यह क्रांति युद्ध में रूस की सैनिक पराजय का परिणाम नहीं थी। युद्ध ने रूस में उन प्रक्रियाओं को तीव्र कर दिया जो लंबे अर्से से रूस की जारशाही व्यवस्था की जड़ों को खोखला कर रही थीं।

6.1 रूसी क्रांति के कारण *(Causes of Russian Revolution)*

रूसी क्रांति के कारणों से संबंधित विभिन्न आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक पक्ष थे। इस क्रांति के पीछे जार शासक का तानाशाही रवैया, राज्य का आर्थिक दिवालियापन, विभिन्न युद्ध एवं रूस में राजनीतिक जागरूकता ज़िम्मेदार मानी जा सकती है। क्रांति के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है।

रूसी क्रांति के कारण

- रूस में निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी जारशाही तंत्र
- रूस-जापान युद्ध
- राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक दलों का उदय
- किसानों एवं मज़दूरों की हीन दशा
- समाजवादी विचारधारा का प्रसार
- राज्य का आर्थिक दिवालियापन
- जार की रूसीकरण की नीति
- तात्कालिक कारण

रूस में निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी जारशाही तंत्र *(Autocratic and voluntary fascism system in Russia)*

- रूस के शासक को 'जार' कहा जाता था, जो एक निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासक के रूप में बदनाम था। ऐसी स्थिति में जब 19वीं शताब्दी में लगभग संपूर्ण यूरोप में परंपरागत शासन के स्वरूप में व्यापक राजनीतिक परिवर्तन हो रहे थे, रूसी शासक दैवी शक्ति के सिद्धांत के आधार पर रूढ़िवादी शासन को प्रश्रय दिये हुए थे।
- रूस का जार निकोलस द्वितीय, जिसके समय में क्रांति हुई थी, अत्यंत ही भोग-विलासी शासक था तथा प्रजा के मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता था।
- कृषक दासता से मुक्ति एवं रूस के औद्योगीकरण के कारण मज़दूरों की संख्या में वृद्धि हुई, परंतु इनमें से न तो कृषकों को और न ही मज़दूरों को राजनीतिक अधिकार मिल सका। हालाँकि 1861 ई. के पश्चात् कुछ स्वायत्तशासी परिषदें शहरों एवं गाँवों में अस्तित्व में आईं, परंतु इनका संगठन संतोषजनक नहीं था। इन परिषदों में भूमिपतियों एवं धनी लोगों का ही बोलबाला था।
- रूसी शासक जार द्वारा प्रगतिशील प्रवृत्तियों के विरुद्ध घोर दमन की नीति अपनाई गई, जैसे उस समय प्रेस की स्वतंत्रता नहीं थी तथा नागरिकों को किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं थे। बौद्धिक विचारों पर भी कठोर नियंत्रण था।
- जार निकोलस द्वितीय की पत्नी जरीना एवं मंत्री रासपुतिन भी निरंकुश शासन के घोर पक्षधर थे। ये दोनों रूस के राजनीतिक एवं प्रशासनिक तंत्र पर विशेष नियंत्रण रखते थे। राजकीय कार्यों में इनका काफी हस्तक्षेप था। इन परिस्थितियों में जब 19वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे एवं राजतंत्र की शक्ति सीमित कर संवैधानिक राजतंत्र या गणतंत्र की स्थापना हो रही थी, रूसी जनता जारशाही व्यवस्था के विरुद्ध संगठित होने लगी थी।

अध्याय
7

प्रथम विश्व युद्ध (First World War)

प्रथम विश्व युद्ध विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। यह एक ऐसी घटना थी जब एक यूरोपीय युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो गया। इस युद्ध की पृष्ठभूमि में अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति, साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता, शस्त्रों की होड़, उग्र राष्ट्रवाद, ऑस्ट्रिया के राजकुमार फर्डीनेंड की सेराजेवो में हत्या आदि तत्त्व शामिल थे। इस युद्ध में जितनी अधिक धन-जन की बर्बादी हुई उतनी बर्बादी मानव इतिहास के किसी भी युद्ध में इससे पूर्व नहीं हुई थी। इससे पूर्व की लड़ाइयों में गैर-सैनिक जनता साधारणतया शामिल नहीं होती थी तथा जान की हानि आमतौर पर युद्धरत सेनाओं को उठानी पड़ती थी। 1914 ई. के इस विश्व युद्ध का क्षेत्र सर्वव्यापी था एवं इस युद्ध में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर विश्व के लगभग सभी देश सम्मिलित हुए। इस दौरान यूरोप, एशिया, अफ्रीका तथा प्रशांत क्षेत्र में लड़ाइयाँ लड़ी गईं थीं। इसके अभूतपूर्व विस्तार एवं सर्वांगीण प्रकृति के कारण ही इसे "प्रथम विश्व युद्ध" कहा गया। यह विश्व युद्ध 28 जुलाई, 1914 से 11 नवंबर, 1918 तक चला था।

7.1 प्रथम विश्व युद्ध के कारण *(Causes of First World War)*

यूरोपीय युद्ध ने पहली बार विश्व युद्ध का रूप ले लिया था। इसमें विश्व के सभी देश प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित हुए। प्रथम विश्व युद्ध अनेक कारणों का परिणाम था। इन कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है–

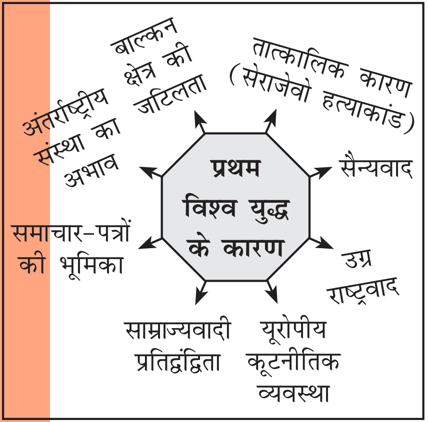

यूरोपीय कूटनीतिक व्यवस्था

- 1871 ई. में जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् बिस्मार्क द्वारा यह घोषणा की गई थी कि जर्मनी एक संतुष्ट राष्ट्र है एवं वह क्षेत्रीय विस्तार के संबंध में कोई इच्छा नहीं रखता है। इसके बावजूद उसने फ्राँस से अल्सास-लॉरेन का क्षेत्र लेकर उसे आहत कर दिया और यह वही बिंदु है जिस पर जर्मनी को हमेशा यह भय बना रहता था कि फ्राँस यूरोप में दूसरे देशों के साथ मित्रता स्थापित कर जर्मनी के खिलाफ बदले की कार्रवाई न कर दे।
- बिस्मार्क अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फ्राँस को अलग-थलग अथवा एकाकी रखने के लिये कूटनीतिक जाल बुनने लगा। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उसने 1879 ई. में ऑस्ट्रिया के साथ द्वैध संधि की जो एक गुप्त संधि थी। 1882 ई. में इटली ने द्वैध संधि में शामिल होकर इसे त्रिवर्गीय संधि का रूप प्रदान किया।
- बिस्मार्क की यह कोशिश भी रही कि रूस के साथ सम्यक् संबंध कायम हो, इसलिये 1871, 1881 तथा 1887 ई. में उसने रूस के साथ संधि कर उसे अपने पक्ष में मिलाए रखा। इस प्रकार बिस्मार्क की यह हरसंभव कोशिश रही कि फ्राँस को मित्रहीन बनाए रखा जाए और वह इसमें सफल भी रहा।
- 1890 ई. में बिस्मार्क के चांसलर पद से हटने के बाद जर्मन सम्राट विलियम कैसर उसकी इस विरासत को संभाल पाने में सफल नहीं रहा। 1894 ई. में फ्राँस ने अंततः रूस से मित्रता कर ली। 1907 ई. में इंग्लैंड, फ्राँस तथा रूस ने आपस में समझौता कर इसे 'त्रिवर्गीय मैत्री संघ' का रूप दिया। इस प्रकार यूरोपीय देशों में जबरदस्त गुटबाजी का दौर चल पड़ा।
- सभी साम्राज्यवादी देशों ने अपने-अपने हितों को साधने के लिये गुटबाजी को प्रश्रय दिया एवं आपस में गुप्त संधियाँ कीं। इन विभिन्न यूरोपीय देशों के इन कृत्यों से यूरोप में शंका का वातावरण व्याप्त हो गया। इस प्रकार इन दोनों गुटों में प्रतिद्वंद्विता एवं तनाव बढ़ता गया तथा प्रथम विश्व युद्ध में दोनों गुट एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ने में संलग्न हो गए।

अध्याय
8

द्वितीय विश्व युद्ध
(Second World War)

1 सितंबर, 1939 को जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण के साथ ही घटनाओं का वह सिलसिला शुरू हुआ, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध को व्यापक आधार प्रदान किया। द्वितीय विश्व युद्ध वर्साय-संधि की कठोरता, विश्वव्यापी आर्थिक मंदी, तानाशाही राजनीति, इंग्लैंड की तुष्टिकरण की नीति, शस्त्रीकरण, शक्ति-संतुलन की गड़बड़ी जैसे कुछ मूलभूत कारणों का समन्वित परिणाम था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद गंभीर आर्थिक समस्याओं एवं विषाक्त राजनीतिक परिदृश्य के रूप में उभरती चुनौतियों का सामना करने में अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'राष्ट्र संघ' सफल नहीं हो सका। संदेह एवं शक्ति-संतुलन की राजनीति में कोई भी देश एक-दूसरे के ऊपर विश्वास करने को किसी भी हालत में तैयार नहीं था। संयोग से यूरोपीय राजनीति में इटली एवं जर्मनी में क्रमशः मुसोलिनी एवं हिटलर जैसे तानाशाहों के अधीन सत्ता स्थापित हुई। द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में एक धारणा जो प्रचलित है वह यह कि द्वितीय विश्व युद्ध एक प्रतिशोधात्मक युद्ध था। इसमें कोई दो राय नहीं कि 1919 ई. के पश्चात् विभिन्न यूरोपीय देशों में अधिनायक तंत्र अस्तित्व में आया, जो इस बात की पुष्टि करता है कि ये देश अपने अपमान का बदला लेने के लिये तैयार थे। इन सभी कारणों के समन्वित परिणाम से द्वितीय विश्व युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

8.1 द्वितीय विश्व युद्ध के कारण *(Causes of Second World War)*

यह कहना बिल्कुल जायज है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बीज 1919 ई. के पेरिस शांति समझौते में अंतर्निहित थे। इस सम्मेलन में जर्मनी के साथ अपमानजनक, कठोर एवं आरोपित वर्साय की संधि की गई थी और यह बात तो निश्चित ही थी कि जर्मनी इन कठोर शर्तों को लंबे समय तक व्यवहार में नहीं ला सकता था। शस्त्रों की होड़, उग्र राष्ट्रवादी भावनाएँ एवं राष्ट्रसंघ की कमज़ोरी जैसे कुछ ऐसे निर्णायक कारक भी थे, जिन्होंने परिस्थिति को द्वितीय विश्व युद्ध में परिवर्तित कर दिया। इस विश्व युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

- वर्साय संधि की त्रुटियाँ
- तुष्टीकरण की नीति
- राष्ट्रसंघ की विफलता
- वैश्विक आर्थिक मंदी
- तात्कालिक कारण

वर्साय संधि की त्रुटियाँ

- वर्साय की संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निहित थे। पेरिस शांति संधि के समय यह बात खुलकर सामने आई कि वर्साय संधि द्वारा एक ऐसे विष वृक्ष का बीजारोपण किया जा रहा है जो जल्द ही भयंकर विनाशलीला को दस्तक देगा एवं इसका फल समस्त मानव जगत को भुगतना पड़ेगा।
- जर्मनी के साथ की गई वर्साय की संधि में वुडरो विल्सन के आदर्शवादी सिद्धांतों की सर्वथा उपेक्षा की गई थी। पराजित जर्मनी के समक्ष आरोपित, अपमानित एवं कठोर संधि को स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं था। इस स्थिति में जर्मनी के लिये यही बुद्धिमानी थी कि वह वर्साय संधि के इस कड़वे घूँट को पी जाए।
- संधि ने जर्मनी को सैन्य एवं आर्थिक दृष्टिकोण से पंगु बना दिया। जर्मनी से अल्सास-लॉरेन के क्षेत्र एवं श्लेसविग के छोटे राज्य छीन लिये गए थे, पोलैंड गलियारा निर्मित कर जर्मनी का विच्छेद कर दिया गया था, उसे अपने सभी उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा, सार क्षेत्र की प्रसिद्ध खानों से 15 वर्षों के लिये वंचित कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त जर्मनी को आर्थिक साधनों से वंचित कर उस पर क्षतिपूर्ति की भारी रकम थोप दी गई एवं उसे वसूलने के लिये कठोर साधन अपनाए गए।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596